सामाजिक परिवर्तन के प्रतिनिधि के रूप में शिक्षा एवं शिक्षक

शोभा रानी सभ्रवाल*

भारतवर्ष के गरिमामय इतिहास में हमारे प्राचीन मनीषियों ने शिक्षण द्वारा तथा नवीन शिक्षालयों को स्थापित कर अपेक्षित सामाजिक परिवर्तनों में अपनी सशक्त भूमिका का निर्वाह किया है। इन्हीं शिक्षालयों के माध्यम से वशिष्ठ, सन्दीपन, विश्वामित्र और द्रोणाचार्य आदि आचार्यों ने सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन कर दिये थे, किंतु ज्यों ही लोकप्रिय शिक्षा की माँग उत्पन्न हुई शिक्षक से अपेक्षायें उसी प्रकार से बढ़ने लगीं। आज उससे अपेक्षा है कि वह अपेक्षित सामाजिक परिवर्तनों में प्रभावपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में सामने आए।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। संसार की प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन जड़ और चेतन सभी में दृष्टिगोचर होता है। प्रकृति में यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। जब जड़ प्रकृति में परिवर्तन होता है तो मनुष्य तो चेतन है। उसमें, उसके द्वारा निर्मित सामान में, उसकी व्यवस्था में, उसके क्रियाकलापों में भला परिवर्तन कैसे नहीं होगा? समाज मानव जीवन के प्रारंभ से ही मनुष्य के साथ है तब से लेकर आज तक समाज या सामाजिक जीवन में, उसके स्वरूप, संरचना, व्यवस्था, संगठन, आदर्श, मूल्य सभी में परिवर्तन की निरंतर और अवश्यंभावी प्रक्रिया में कभी भी अवरोध नहीं आया। किसी भी ऐसे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती जो पूर्णत: स्थिर हो।

सामाजिक परिवर्तन दो शब्दों से मिलकर बना है - समाज और परिवर्तन। समाज का अर्थ केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है। समूह में रहने वाले व्यक्तियों के आपस में जो संबंध हैं, उन संबंधों के संगठित रूप को समाज कहते हैं। समाज सामाजिक संबंधों का जाल है। परिवर्तन का अर्थ है - बदलाव अर्थात् पहले की स्थिति में बदलाव। पहले की स्थिति और आज की स्थिति में आने वाला अंतर या बदलाव ही परिवर्तन है। इस प्रकार समाज की पहले की स्थिति और बाद की स्थिति में अंतर आ जाना ही सामाजिक परिवर्तन है। सामाजिक संगठन, सामाजिक ढाँचे,

*हाउस नं.-313/1, लेन नं.-14, विजय पार्क एक्सटेंशन, देहरादून, उत्तराखंड

सामाजिक संबंधों या समाज के रहन-सहन के ढंग, रीति-रिवाजों, मूल्यों और विश्वासों आदि में जो अंतर आ जाता है वह सामाजिक परिवर्तन कहलाता है।

एफ.ई. मैरिल[1] के अनुसार – *''समाज अभिरचित संबंधों का एक जटिल जाल है जिसमें सब सदस्य विभिन्न अंशों में भाग लेते हैं। यह संबंध बदलते रहते हैं और व्यवहार भी उसी काल में बदल जाता है। सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन निहित है।''*

गिन्सबर्ग[2] कहते हैं – *''सामाजिक परिवर्तन से मैं सामाजिक संरचना में परिवर्तन समझता हूँ जैसेकि समाज के आकार, बनावट या इसके भागों का संतुलन या इसके संगठन के प्रकार में परिवर्तन।''*

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया

सामाजिक परिवर्तन समय सापेक्ष है और समयानुसार ही इसकी गति बहुत धीमी या तीव्र होती रहती है। कुछ विद्वान सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं।

मनुष्यों के अनुभवों में परिवर्तन
↓
मनुष्यों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन
↓
मनुष्यों के विचारों में परिवर्तन
↓
सामाजिक अन्त:क्रिया में परिवर्तन
↓
सामाजिक संबंधों में परिवर्तन
↓
सामाजिक संरचना में परिवर्तन
↓
सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत

सामाजिक परिवर्तन के तीन सिद्धांत हैं –

1. **रेखीय सिद्धांत** – इस सिद्धांत के प्रतिपादक काम्टे, स्पेन्सर और कार्ल मार्क्स को माना जाता है। इन्होंने समाज के विकास के क्रम को ऐतिहासिक बताया और एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ परिवर्तन चक्र स्थिर होकर रह जायेगा। काम्टे ने सामाजिक परिवर्तन को बौद्धिक विकास का परिणाम बताया है और बौद्धिक विकास की तीन अवस्थाएँ बतायी हैं – (अ) धार्मिक अवस्था (ब)तात्विक अवस्था (स) वैज्ञानिक अवस्था।
2. **चक्रीय सिद्धांत** – इस सिद्धांत के प्रतिपादक स्पेंगलर, सोरोकिन और टायनवी माने जाते हैं। टायनवी के अनुसार – समाज में परिवर्तन व्यक्ति की आंतरिक आध्यात्मिक शक्ति के कारण आता है। सोरोकिन के अनुसार – समाज की तीन श्रेणियाँ हैं – विचारात्मक, संवेदनात्मक और आदर्शात्मक जो समाज में समयानुसार परिवर्तन लाती हैं।

   स्पेंगलर ने सामाजिक घटनाओं के तीन चरण बताये हैं – जन्म, परिपक्वता और अन्त, जो समाज में परिवर्तन लाने के लिए उत्तरदायी हैं।
3. **प्राविधिक सिद्धांत** – इस सिद्धांत का प्रतिपादन आँगबर्न ने किया। उन्होंने सभी प्रकार के सामाजिक परिवर्तन का

आधार तकनीकी क्षेत्र में होने वाले विकास को बताया और सामाजिक परिवर्तन तथा आविष्कारों के मध्य संबंध स्थापित किया। उन्होंने कहा कि नवीन आविष्कारों का अर्थ है – नवीन सांस्कृतिक गुणों व तत्वों की खोज, यह खोज वर्तमान संस्कृति में हेर-फेर भी हो सकती है और पूरी तरह से नवीन भी हो सकती है। जब समाज इसको अपनाने लगता है तब समाज में परिवर्तन आ जाता है।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का वर्गीकरण

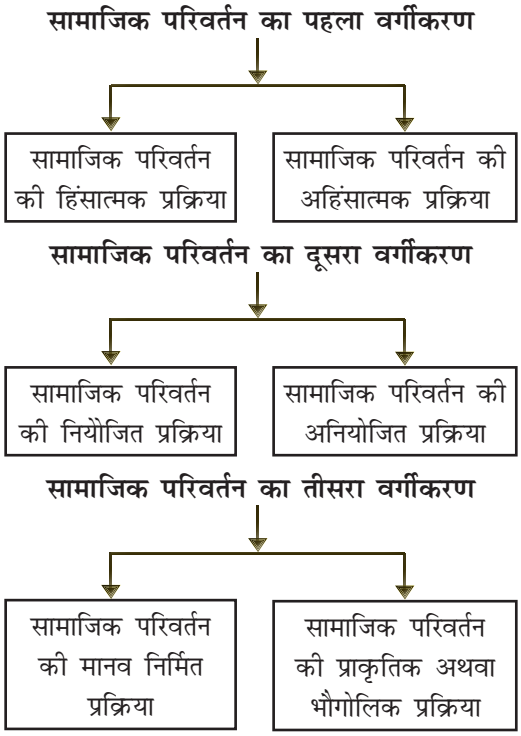

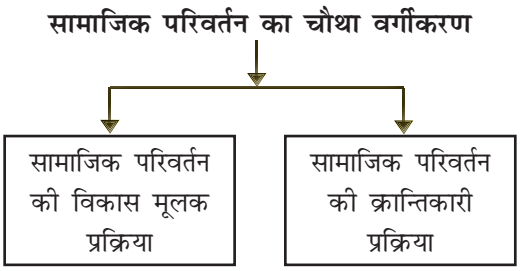

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का साधन है

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्त्वपूर्ण और सशक्त साधन है। डॉ. राधाकृष्णन[3] ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन मानते हुए कहा है कि – *''शिक्षा परिवर्तन का साधन है जो कार्य साधारणतया समाज में परिवार, धर्म, सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है, वही आज शिक्षा संस्थाओं द्वारा किया जाता है।''*

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे अधिक शक्तिशाली यंत्र है। शिक्षा द्वारा ही समाज में वास्तविक परिवर्तन होता है और वह आधुनिक बनता है। अनेक अनुसंधानों में शिक्षा की भूमिका का प्रयोग सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण के संदर्भ में किया गया है। होल्मवर्ग तथा डोबिन्स[4] ने विकोज़ (VICOS) एक्शन रिसर्च प्रोजेक्ट का वर्णन किया है। इस प्रोजेक्ट का निष्कर्ष यह था कि *''शिक्षा जैसे-जैसे सामाजिक स्तर से जुड़ती गई, वैसे-वैसे यह विस्तृत सामाजिक परिवर्तन के जाल में फँसती गई।''*

एक अन्य अध्ययन जो लर्नर द्वारा किया गया उसमें पता चला कि आधुनिकीकरण की कुंजी सहभागी समाज में पाई जाती है जो कि ऐसा समाज

है जिसमें व्यक्ति विद्यालय में जाते हैं, अखबार पढ़ते हैं, बाज़ार की आर्थिक व्यवस्था में भागीदार हैं, मतदान में राजनैतिक ढंग से भाग लेते हैं तथा अपने मतों को व्यापार संबंधी मामलों के बारे में बदल लेने को तत्पर रहते हैं। फिलिप फोस्टर ने घाना तथा शिल्स[6] ने भारत का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा की सामाजिक परिवर्तनों में महत्वपूर्ण भूमिका है। सिल्स ने भारत के बुद्धिजीवियों का अध्ययन किया और इस परिणाम पर पहुँचे कि यदि पारंपरिक और आधुनिक समाजों के बीच की दूरी समाप्त करने में सफलता मिलती है तो इसका बीड़ा पश्चिमी शिक्षा द्वारा शिक्षित बुद्धिजीवियों को ही उठाना चाहिए।

अनेक अनुसंधानों में यह भी पाया गया कि राजनैतिक विकास बहुत कुछ शिक्षा पर निर्भर है। कोलमान, पेशकिन, फोस्टर, कूले, सुटन, लिप्से तथा अनेक अन्य अनुसंधानकर्ताओं ने यह पाया कि राजनैतिक परिवर्तन में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे अध्ययनों के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि शिक्षा राजनैतिक अधिकारी तंत्र द्वारा जिन कौशलों की आवश्यकता है, वह विकसित करती है। अनेक उभरते हुए राष्ट्रों में यह एक सर्वमान्य भाषा विकसित करती है। यह प्रशासकों के चयन में सहयोग देती है तथा परतंत्र राष्ट्रों को केंद्रीय शक्ति स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए प्रदान करती है। कुछ अध्ययन जो वर्तमान समय में भारत में हुए हैं उन्होंने शिक्षा के आधुनिकीकरण पर सकारात्मक प्रभाव दर्शाया है। जी.एस. भटनागर[7] ने सन् 1972 में अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षित व्यक्तियों में अशिक्षित व्यक्तियों की तुलना में आधुनिक अभिवृत्तियाँ थीं। वाई.के. मलिक तथा जेसी.एफ. मारक्वॅट[8] ने सन् 1974 में किये गये अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला था कि शिक्षा अभिवृत्ति परिवर्तन का साधन है। आर.एस. पाण्डे[9] के अध्ययन का निष्कर्ष था कि औपचारिक विद्यालयी शिक्षण एक बालक के अनुभवों में किशोरकाल से पूर्व तथा किशोरकाल में आकृति प्रदान करता है। वी.एल. जिन्दल[10] द्वारा योजनाबद्ध अध्ययन में पाया गया कि विद्यालयी शिक्षा का स्तर सब विद्यालयों में सकारात्मक रूप से विद्यार्थियों की आधुनिकता से संबंधित था चाहे यह विद्यालय शहर में थे या ग्राम में। उपरोक्त सभी अध्ययनों के आधार पर यही निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा ही सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन है तथा यह सामाजिक परिवर्तन किस प्रकार करती है। कोठारी कमीशन[11] (1964-66) की रिपोर्ट में कहा गया कि – *''यदि एक महान मापक्रम पर ऐसा परिवर्तन बिना हिंसात्मक क्रान्ति के लाना है तो एक यन्त्र है और केवल एक यन्त्र ही है जिसका उपयोग किया जा सकता है – शिक्षा।''*

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का अनुसरण करती है

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के संबंध का दूसरा रूप है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का अनुसरण करती है। इसका अर्थ है कि सामाजिक परिवर्तन पहले होते हैं और शिक्षा तो केवल उनका अनुसरण करती है, उसके पीछे-पीछे चलती है। जब मूल्यों, आवश्यकताओं और प्रविधियों में परिवर्तन होने लगता है तो शिक्षा भी अपने आपको उन्हीं के अनुसार बना लेती है। सामाजिक परिवर्तनों के

अनुसार शिक्षा के स्वरूप, उसके उद्देश्यों, उसके पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों आदि में परिवर्तन होता है। ओटावे इस संदर्भ में कहते हैं कि *''कभी-कभी यह सुझाव दिया जाता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक कारण है। इसके विपरीत अधिक सत्य है शैक्षिक परिवर्तन अन्य सामाजिक परिवर्तनों को आरंभ करने की अपेक्षा इनका अनुसरण करता है।''*

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज के इस संक्रमण काल में शिक्षक ही लोगों के अंदर व्याप्त अंधकार को दूर कर उन्हें प्रगति पथ की नयी राह दिखा सकता है वहीं परिवर्तनों के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करके नये परिवर्तनों में आस्था पैदा कर सकता है और परिवर्तनों को लाने में समाज का नेतृत्व भी कर सकता है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से शिक्षक एक मित्र, पथ-प्रदर्शक और दार्शनिक के रूप में बहुत महत्वपूर्ण व्यक्तित्व सिद्ध हो सकता है। शिक्षक की भूमिका के संदर्भ में निम्न बातें उसे अधिक प्रभावी बना सकती हैं–

1. शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन की सुनियोजित दिशा व गति प्रदान करनी चाहिए।
2. शिक्षक को प्रजातान्त्रिक जीवन-मार्ग अपनाना चाहिए।
3. शिक्षक का व्यवहार निष्पक्ष और सभी के लिए समान होना चाहिए।
4. शिक्षक को समाज में व्याप्त संकीर्णता और पिछड़ेपन को दूर करके आदर्शों व मूल्यों की प्रतिष्ठा करनी चाहिए।
5. शिक्षक को बालकों की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के कारण उनमें उच्चता और निम्नता की भावना को पनपने नहीं देना चाहिए।
6. शिक्षक को समाज की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक प्रगति के विकास में सक्रिय योगदान देना चाहिए।
7. शिक्षक को लोगों के मन से सांस्कृतिक जड़ता की भावना को दूर करके उन्हें नवीन परिवर्तन के लिए तैयार करना चाहिए।
8. शिक्षक को समाज में होने वाले नवीन परिवर्तन की जानकारी देनी चाहिए जिससे विद्यार्थी उसका अनुसरण करके अपने विचारों को प्रगतिशील बना सकें।
9. शिक्षक बुद्धिजीवी होता है उसे ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों की व्यापक जानकारी होती है। अपने इस उच्च ज्ञान के आधार पर उसे नये परिवर्तनों के लिए भूमिका तैयार करनी चाहिए, उन्हें प्रारम्भ करना चाहिए और उनको नियंत्रित करना चाहिए जिससे ये परिवर्तन सही दिशा की ओर हो सकें।
10. शिक्षक को बालकों के समक्ष अपने को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना चाहिए जिससे विद्यार्थी उसका अनुसरण करके अपने विचारों को प्रगतिशील बना सकें।
11. शिक्षक को बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना चाहिए जिससे समाज वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से विकास कर सके।
12. शिक्षक को समाज की गतिविधियों और क्रियाकलापों का पूर्ण परिज्ञान होना चाहिए जिससे वह समाज को विचार और क्रिया में नेतृत्व प्रदान कर सके।

संदर्भ

1. एफ.ई. मेरिल. (1965). *सोसाइटी एंड कल्चर*: एन इंट्रोडक्शन टू सोश्योलॉजी, एनजल्वुड क्लिफ्स, एन.जे. प्रेन्टिस हॉल.
2. मोरिस गिन्सबर्ग. *''सोशल चेन्ज'' ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी*, वॉल-9, पृष्ठ 205-229, सितंबर 1958, पृष्ठ 205
3. एस. राधाकृष्णन. 1944. *एजुकेशन, पालिटिक्स एन्ड वॉर, द इंटरनेशनल बुक सर्विस, पूना, इंडिया*
4. एलिन आर. होल्मबर्ग एंड डोविन्स. 1962. द *प्रोसिस ऑफ एक्सलरेटिंग कम्युनिटी चेंज*, ह्यूमन, ऑरगनाइज़ेशन, वॉल-21, पृ. 109-9
5. डेनियल लर्नर. 1958. द *पासिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसाइटी*: मॉर्डनाइजिंग द मिडल ईस्ट, द फ्री प्रैस, पृ. 466.
6. एडवर्ड शिल्स. 1961. द *इन्टलेक्चुअल बिटवीन ट्रेडीशन्स एन्ड मॉडर्निटी*, माउंटन एण्ड कंपनी, पृष्ठ 9-120
7. भटनागर, जी.एस. *एजुकेशन एंड सोशल चेंज*, कोलकाता, द मिनरवा एसोसिएट्स, 1992
8. मलिक, वाई. के. जेसी एफ. मारक्वॅट. 1974. *''चेन्जिंग सोशल वेल्यूज़ ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन पंजाब''* एशियन सर्वे, वोल्यूम. 14 नं. 9– 795-806, 1974
9. पाण्डे, आर.एस. 1977. *चाइल्ड सोशलाइज़ेश इन माडर्नाइज़ेशन*, सौम्या पब्लिकेशन, नयी दिल्ली
10. जिन्दल, वी.एल. 1984. *स्कूलिंग एन्ड मॉडर्निटी*, नयी दिल्ली, इन्टर इंडिया, 1984
11. गवर्न्मेंट ऑफ इंडिया. 1966. *रिपोर्ट ऑफ़ द एजुकेशन कमीशन*, 1964-66. *मिनिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन*, पृष्ठ 4